17.09-1/4 hrs.

MOTION OF NO-CONFIDENCE IN COUNCIL OF MINISTERS—*contd.*

श्रीमती सावित्री निगम: सभापति महोदय, इस में कोई सन्देह नहीं है कि आज देश भर में एक महान् विपत्ति इस सूखा और अकाल की दशा के कारण आ गई है। लोगों का कहना यह है, और लोगों का ही नहीं, एक्सपर्ट्स का कहना यह है कि सन् 1857 में जो सूखा और अकाल पड़ा था उस के बाद 100 वर्षों में कभी भी इस तरह का भयानक सूखा और अकाल कभी नहीं आया। मुझे आज आपके द्वारा, इस सदन के द्वारा इस देश के सारे भाइयों और बहनों से यह अनुरोध करना है कि इस विपत्ति के समय में, उस से लड़ने के लिये सावधान रह कर और आपस में मिल जुल कर एकता के साथ उस का सामना करें। लेकिन आज यहां पर इस सदन की कार्यवाही को देख कर और विरोधी दलों के भाषणों को सुन कर मेरा मन क्षुब्ध हो चुका है। विरोधी दलों में यह तो हमेशा हो होता है कि चाहे कोई अच्छी बात हो या बुरी बात हो, विरोधी दल सरकार का कुछ न कुछ विरोध करते हैं। जब देश पर इतनी भारी विपत्ति आई हो, जब देश की लाखों करोड़ों जनता भुखमरी और अकाल और पीने के पानी की वजह से तड़प रही हो, उस समय इस स्थिति का नाजायज फायदा उठाना और लोगों को तोड़-फोड़ और हिंसात्मक कार्य करने के लिए भड़काना, अविश्वास की भावना फैलाना, मरते हुओं का शोषण करना मैं समझती हूं स्वार्थ की चरम सीमा है। मैं चाहती हूं कि देशवासी इन विरोधी दलों से, इन स्वार्थी लोगों से होशियार और चौकन्ने हो जाएं।

आप देखें कि एक भी विरोधी दल के माननीय सदस्य ने यह नहीं कहा कि सूखे का मुकाबला करने के लिए आप अमुक अमुक स्टैप लें, अमुक कार्रवाई करें, जमीन को सींचें ताकि कम से कम रबी की बुवाई तो हो सके। ये वह लोग हैं जो कभी किसानों के पास गए तक नहीं हैं। ये वे लोग हैं जो कि ट्रेड यूनियन्स के दफ्तरों में बठकर, विद्यार्थियों के बीच में बठ कर उनको हिंसात्मक कार्रवाई करने के लिए भड़काते रहते हैं। हिंसात्मक कार्यवाही भी विदेशों की प्रेरणा से ये करवाते हैं। चीन, रूस, पाकिस्तान से इनको सन्देश मिलते हैं और उन सन्देशों को ये कार्यान्वित करते हैं। माननीय बनर्जी साहब ने अभी ऐसी बेबुनियाद बात कही है कि मैं सुन कर हैरान रह गई। उन्होंने कह दिया सरदी पड़ी तो यह दोष कांग्रेस का है, पाला पड़ा तो वह दोष कांग्रेस का है। आप देखें कि लोग पिस रहे हैं, उनके भूखों मरने की नौबत आ रही है और यहां यह कह रहे हैं कि मामूली गर्मी पड़ गई है, मामूली सूखा पड़ गया है और सारा जो दोष है वह कांग्रेस का है: मैं समझती हूं कि ये गांवों में कभी गए नहीं हैं: रूरल एरियाज में जा कर कभी इन्होंने वहां की समस्या को समझने की कोशिश नहीं की है। मैं इनको चुनौती देती हूं कि ये आयें और आकर बांदा की स्थिति को देखें, वहां गांवों की स्थिति को देखें। मैं कहती हूं कि इतना प्राम्प्ट एक्शन अगर सरकार ने न लिया होता और श्रीमती सुचेता कृपलानी ने और श्रीमती इन्दिरा गांधी ने न लिया होता तो मेरे क्षेत्र में कम से कम सात आठ लाख लोग मर गए होते, बंगाल का जो अकाल था, उसकी पुनरावृत्ति यहां हो गई होती। इनको नहीं मालूम कि आज बांदा क्षेत्र में कुओं में पानी नहीं है, स्त्रियों को पानी लेने के लिए दस दस और पन्द्रह पन्द्रह मील दूर जाना पड़ता था लेकिन अब वहां भी पानी नहीं रहा है। नतीजा यह है कि हम लोग रेलों से, स्पेशल ट्रेन्ज से पानी पहुंचा रहे हैं। हमारे भाई बनर्जी साहब जो सिर्फ अस्सी मील दूर बैठते हैं वह कहते हैं कि मामूली सूखा हो गया और उसको इन्होंने अकाल कह दिया। स्वार्थ की चरम सीमा के दिग्दर्शन आपको यहां हो जाते हैं। इसकी कोई लिमिट तो होनी चाहिये। इस प्रकार का विरोधी दल मैं समझती हूं कि देश की प्रजातांत्रिक

व्यवस्था के लिये बहुत खतरनाक है। देश पर कमजोरी आई हुई है, देशवासियों पर विपत्ति आई हुई है और ये कहते हैं मामूली बात है। मैं देश के कर्णधारों से कहती हूं कि वे इस पर विचार करें। इन्होंने यह भी कहा है कि कान्यकुब्ज कालेज के प्रिंसिपल पर हमला किया गया पी० ए० सी० के लोगों द्वारा। मैं कहना चाहती हूं कि झूठ की कोई सीमा होती है। जितना झूठ चाहे आप बोलें लेकिन भगवान के लिए जो लोग इस सदन में नहीं हैं और जो अपने आप को डिफेंड नहीं कर सकते हैं, उनके बारे में इस तरह की बातें तो न कहें। उन पर इस प्रकार का आरोप लगाना मानवता के परे की बात है। मैं बतलाना चाहती हूं कि अगर उस दिन वहां पर पी०ए० सी० और पुलिस के लोग नहीं होते तो कालेज को तो आग लगी ही होती, आ. हमारे बनर्जी भाई भी यहां दिखाई न देते। जब हिंसा की प्रवृत्ति उभड़ती है तो कोई फर्क नहीं देखती है, कोई फर्क नहीं जानती है, कौन मित्र है, कौन शत्रु है, कौन बच्चा है, कौन बूढ़ा है, कौन स्त्री है, कौन पुरुष है, इसको नहीं देखती है। वह अगर वहां होते तो इनकी गर्दन साफ़ हो गई होती। हमारे विरोधी दल के भाई अगर तोड़फोड़ की कार्रवाइयां करते हैं तो उनको सोच लेना चाहिये कि यह वह आग है, हिंसा की अग्नि वह अग्नि है जो सब को निगल जाती है और ये लोग भी उससे बच नहीं सकते हैं। भोले भाले, सीधे सादे विद्यार्थियों को जिस तरह से इन्होंने भड़का रखा है, जिस तरह से हिंसात्मक प्रवृत्तियां जागृत करने के लिए उन में अपने एजेंट भेज रखे हैं, उसका एक सबूत में आपको बतलाना चाहती हूं। कुछ विद्यार्थी चूंकि उन्होंने जलाने का काम किया, वे गिरफ्तार हुए। उनके पास से लैफ्ट कम्युनिस्ट पार्टी का यह सर्क्युलर पकड़ा गया और लैफ्ट कम्युनिस्ट पार्टी का भी नहीं वह सर्क्युलर चीन से आया था और उस में लिखा हुआ था कि विद्यार्थियों को रेल उखाड़ने, पोस्ट आफिस जलाने और तमाम हिंसात्मक कार्यवाहियां करने का आदेश दो और इसके लिए जो जरूरी सामान हो वह इन्हें दो। अब आप बतायें कि ला एण्ड आर्डर की सिचुएशन को कायम रखा जाय या न रखा जाय। देश को हमने जो इतने खून पसीने से इतने दिनों में बनाया है, उसको हम तबाह हो जाने दें, देश को इन लोगों के हाथ में छोड़ दें? ये वे लोग हैं जो विद्यार्थियों को आगे करके खुद पीछे हो जाते हैं। बांदा क्षेत्र का मैं आपको हाल बताती हूं। ये लोग बेचारे भोले भाले हरिजन भाइयों को गांव से यह समझा कर लाये कि चलो ट्रेजरी लूट लो। उनको कहा कि तुम्हें कुछ भी नहीं कहा जाएगा, तुम रुपया भी ले आओ और तुम्हें पांच पांच किलो चीनी भी मिलेगी। वे आ गए और जब पुलिस ने फायर किया तो इन्होंने कह दिया कि छोछे फायर हैं, खाली फायर हैं, डरो मत, आगे बढ़ो। ये अपने आप तो दीवाल के पीछे छिप गये और बेचारे पांच दस हरिजन भाइयों को इन्होंने आगे कर दिया। यह तो इनके कारनामे हैं।

ला एण्ड आर्डर का कंट्रोल इस तरह के आततायियों के हाथों में हम दे सकते हैं! इस तरह से शासन क्या उनको सौंपा जा सकता है? शान्ति को इस तरह से क्या भंग होने दिया जा सकता है? मुल्क में शान्ति को और व्यवस्था को कायम रखने की जिम्मेदारी सरकार की होती है। अब आप ही बताइये कि जब हिंसा फैलाई जाए तो पुलिस का क्या कर्त्तव्य होना चाहिये। इस प्रकार की हिंसा में जो लोग विश्वास करते हैं देश की बागडोर क्या उनको सौंप दी जाए? लाखों बेचारे अबोध बच्चों को, करोड़ों बालों को क्या इस प्रकार से गोलियां खाने के लिए छोड़ दें, हिंसा की कार्रवाई करने के लिए छोड़ दें, उन लोगों के हाथ में सौंप दें जो कि विदेशों से इंस्प्रेशन ले कर इस तरह की तोड़फोड़ की कार्रवाइयां इसलिए कर रहे हैं क्योंकि भुखमरी की नौबत आ सकती है और सूखे के कारण असन्तोष लोगों में है? किस प्रकार से बांदा क्षेत्र में दिन रात अधिकारियों ने काम किया है, उसकी

[श्रीमती सावित्री निगम]

जितनी प्रशंसा की जाए कम है। नेशनल एवार्ड कमेटी में अगर मैं होती तो मैं कहती कि उनको इनाम दो। उन्होंने खाना नहीं खाया, त्यौहार नहीं देखा, छुट्टी नहीं देखी और दो दो और तीन तीन बजे रात तक वे काम करते रहे हैं। कुओं में पानी सूख गया है, उनको उन्होंने पानी पहुंचाया, खाना भी उनको इन्होंने पहुंचाया, दो सौ गांवों को उन्होंने वैकेट करके ऐसे स्थानों पर पहुंचाया जहां रेल से पानी पहुंचाया जा सकता था। सौभाग्य है कि आज देश की बागडोर कांग्रेस सरकार के हाथ में है। हमारे देश की प्रधान मंत्री एक बहन है जो साक्षात भारत माता का रूप है। यह मैं देहाती शब्दों में कह रही हूं। अगर उन्होंने इस तरह से प्राम्प्ट एक्शन न लिया होता तो मैं बतलाना चाहती हूं कि पानी के अभाव के कारण ही लोग प्यासे मर गए होते, खाना न मिलने के कारण तो मरते ही। एक दिन भी हमारे बनर्जी साहब देहात में नहीं गए है। वही नहीं, मैं आपको अपने क्षेत्र की बात बतलाती हूं कि न बनर्जी साहब, न पी० एस० पी० के लोग, न कम्युनिस्ट पार्टी के लोग और न ही किसी और विरोधी पार्टी के लोग वहां गांवों में गए हैं, किसी भी क्षेत्र में वे नहीं गए हैं। आज वहां पर दस टैस्ट वर्क सैंटर्स खुले हुए हैं जिन में पांच पांच हजार आदमी काम कर रहे हैं। आदमियों की व्यवस्था करना, उनको अनाज पहुंचाना उनको वक्त पर वेजिज दिलाना, इस काम को केवल अधिकारी वर्ग पर ही नहीं छोड़ा जा सकता है। वे लोग अगर करना भी चाहें तो यह ह्यूमनली पासिबल नहीं है। मैंने डैसपरेट अपील सब को की, सब दलों के नेताओं से मैं मिली, मैंने उनसे प्रार्थना की कि भाई आओ और इस मौके पर हमारा साथ दो, हम लोगों को भूखों मरने से बचायें, लेकिन आपको सुन कर आश्चर्य होगा कि कहीं से भी किसी एक राजनीतिक दल की तरफ से भी एक भी कार्यकर्त्ता एक घंटे के लिए नहीं आया। पच्चीस दिन तक लगातार मैं गांव गांव घूमी हूं लेकिन एक भी पी० एस० पी० का वर्कर, एक भी कम्युनिस्ट पार्टी का या जन संघ का वर्कर मुझे नहीं मिला। यह मैं चुनौती दे कर कह सकती हूं . . .

17.19 hrs.

[SHRI SONAVANE *in the Chair*]

श्री बड़े: गलत कहती है।

श्री हुकम चन्द कछवाय: आप कार में बैठ कर घूमने के लिए गई थीं।

श्रीमती सावित्री निगम: जन संघ के भाई नाम बता दें, कोई आदमी बता दें जो कि बांदा क्षेत्र में कहीं काम कर रहा हो, तो जो शर्त वह चाहें उसको मानने के लिये मैं तैयार हूं।

जो विपत्ति लोगों पर आई है इसकी जिम्मेदारी सिवाय नेचर के और किसी पर नहीं है। कुओं का पानी सूख गया है, जमीन पर दरारों पड़ गई हैं। बांदा में एक तिनका घास का किसी क्षेत्र में दिखाई नहीं पड़ता है। ऐसी दशा में जबकि पशुओं और आदमियों सब की जान खतरे में है सब से अधिक आवश्यकता इस बात की है कि हम लोग, सब मिलजुल कर इस प्यारे देश की भोलीभाली हजारों लाखों नर नारियों की जानों को बचायें, कैटल वैल्थ को बचायें। लेकिन कोई भी किसी प्रकार का भी सहयोग किसी से सिवाय सरकारी अधिकारियों के, सरकारी रिप्रिजेंटेटिव्ज के किसी से नहीं मिला है।

आज कल हमारे समाचारपत्रों में जिस प्रकार की खबरें निकलती हैं, मैं उस की एक मिसाल देना चाहती हूं। हमारे पास खबर आई कि हनूवा में एक स्त्री भूख से मर गई। मैं कुछ अधिकारियों और कार्यकर्त्ताओं के साथ वहां दौड़ी। रास्ते भर हम लोग दुखी रहे।

वहां पहुंच कर हम लोगों ने देखा कि किसी साहब ने उस स्त्री को लाल झंडे में लपेट रखा था। पूछ-ताछ करने और उस स्त्री के घर वालों से कागजात देखने पर पता चला कि उस को कैन्सर की बीमारी थी। अगर यह खबर अखबारों को दे दी जाती, तो वे भी लिख देते कि भूखे से एक स्त्री मर गई, क्योंकि वे वहां पर नहीं पहुंचे थे और इसलिए वे तथ्यों को नहीं जानते थे। मैं निवेदन करना चाहती हूं कि इस प्रकार तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर और ट्विस्ट कर के बेजा फायदा उठाना और उन बेचारे लोगों का शोषण करना अनुचित है।

मैं एक और मिसाल भी देना चाहती हूं। जिस दिन हम लोग मानिकपुर से करीब पचास मील दूर सरैया नामक स्थान पर 173 बोरे गेहूं का आटा ले कर पहुंचे, उसी दिन खबर आई कि करवी तहसील के सामने बड़ा भारी डिमांस्ट्रेशन हो रहा है, जिस में बहुत से कम्युनिस्ट और प्रजा सोशलिस्ट भाग ले रहे हैं। नतीजा यह हुआ कि आटा तो अपने स्थान पर पहुंच गया, लेकिन सब अधिकारियों को सत्तर मील दूर करवी को भागना पड़ा और जो आटा उसी रात को बांट दिया जाता, उस को बांटने में चौबीस घंटे की देर हो गई। जो बेचारे लोग पहले ही दो तीन दिन से भूखे थे, उन को एक दिन और भूखा रखने की जिम्मेदारी किस पर है, यह मैं अपने विरोधी दल के भाइयों से पूछना चाहती हूं।

आज जब कि इस बात की आवश्यकता थी कि हम सरकारी अधिकारियों को स्थिति को सुधारने में सहयोग देते, उन से पूरा काम लेते और लोगों को भूखों मरने से बचाते, तब डिमान्स्ट्रेशन हो रहे हैं और यहां पर नो कान्फिडेंस मोशन लाया जा रहा है, जिस से सदन का समय खराब हो रहा है।

खाद्य मंत्री महोदय से मैं यह निवेदन करना चाहती हूं कि हमारा बुंदेलखण्ड का सारा क्षेत्र ऐसा है, जो एक इरिगेशन, एक्वाटर से ही चने की बहुत बढ़िया फसल पैदा कर सकता है। उन्होंने कुछ बहुत उम्दा कदम उठाए हैं और देश की सारी फूड स्ट्रेटेजी को बदल दिया है। उस के लिए उन को मुबारकबाद देती हूं, लेकिन अगर वह चाहते हैं कि बुंदेलखण्ड जैसे बड़े क्षेत्र को, जिस की आबादी लगभग पचास लाख है, उन को पूरा वर्ष न खिलाना पड़े, तो उन से मेरा अनुरोध है कि वह वार फुटिंग पर काम कर के ट्रकों से उस क्षेत्र में रिग्ज और पंपिंग सेट ले जायें और साथ साथ वहां पर बिना यह पूछे कि यह किस का खेत है, बिना किसी कानूनी कार्यवाही और रेड टैप के जगह जगह चने की बुवाई करा दें। अगर वह ऐसा करेंगे, तो यह देश की बहुत बड़ी सेवा होगी और उन का बहुत बड़ा योगदान होगा। मैं बताना चाहती हूं कि हमारे क्षेत्र में इतना एका है कि कोई भी आदमी इस काम में रोड़ा नहीं अटकायेगा और उन को पूरी पूरी सफलता मिलेगी।

आज भी हमारे देश में ऐसे एन्टी-सोशल लोग मौजूद हैं, जो अन्न के व्यापारी कहलाते हैं, जिन्होंने अब भी लाखों बोरे अनाज इस लिए छिपा रखा है कि शायद वह एक किलो से घट कर आठ छटांक हो जाये और उन को और भी ज्यादा फायदा हो जाये। इस बात को दृष्टि में रख कर खाद्य मंत्री महोदय एक तो यह निर्णय करें कि फूडग्रेन्ज में स्टेट ट्रेडिंग किया जाये, क्योंकि उस के बिना काम नहीं चल सकता है और दूसरे भगवान के लिए वह कम से कम सूखाग्रस्त क्षेत्रों में छिपे हुए अनाज को बाहर निकालें, वर्ना वहां पर लॉलिसनैस फैलने का खतरा है।

मैं उनको बताना चाहती हूं कि स्वयं मेरे पास लोग आये और उन्होंने कहा कि बनहजी, हम आप के लिए मर-मिटने के लिये तैयार हैं, आप हमें इशारा भर कर दें, तो

[श्रीमती सावित्री निगम]

जिन बाजारों में गल्ला ग़ायब हो गया है, हम गल्ले को लूट कर वहां पर बोरे के बोरे बेचना शुरू कर दें । मैंने उनको कहा कि वे धीरज रखें, हम बाहर से अन्न ला कर उनको जरूर खिलायेंगे और उनको भूखों नहीं मरने देंगे ।

मैं दावे के साथ कह सकती हूं कि विरोधी दल चाहे एक नहीं, दस नो कान्फिडेंस मोशन लायें, लेकिन इस देश की जनता सियाह और सफ़ेद में फ़र्क जानती है । वह समझती है कि अगर आज कांग्रेस गवर्नमेंट न होती, तो पता नहीं क्या होता । वह जानती है कि जब तक कांग्रेस गवर्नमेंट है, तब तक देश में एक भी आदमी भूखा नहीं मर सकता है, चाहे एक नहीं, दस सूखे आयें । हम उसका नमूना देख चुके हैं ।

अगर हम इस वक्त हिम्मत के साथ और एक डायनामिक और डिसाइसिव ढंग से काम लें, तो इस बहुत बड़े अभिशाप को वरदान में बदला जा सकता है । आज देश में जहां जहां टेस्ट वर्क हो रहे हैं, वहां पर सड़कों पर मिट्टी डाली जा रही है और कोई जगह ऊंची की जा रही है । मैं खाद्य मंत्री महोदय से प्रार्थना करूंगी कि सारा टेस्ट वर्क इरिगेशन प्राजेक्ट्स पर होना चाहिए, तालाबों को गहरा किया जाना चाहिए, कुंओं को गहरा करना चाहिए और नये कुंए खोदे जाने चाहिएं । भगवान के लिए वह टेस्ट वर्क की परिभाषा को भी बदलें । यह ब्रिटिश गवर्नमेंट द्वारा लादा गया अभिशाप है । टेस्ट वर्क का वर्तमान रूल बिल्कुल गलत है । पूरा काम लिया जाये और पूरी मजदूरी दी जाये । आज टेस्ट वर्क में रुपया यूं ही फेंका जा रहा है । अगर लोगों से एरियाज को डिमारकेट कर के, उनके ग्रुप बना कर इरिगेशन प्राजेक्ट्स पर काम लिया जाये, तो इस से दस गुना ज्यादा काम होगा । धन्यवाद ।

Shri Shinkre: Mr. Chairman, Sir, I did not want to participate in this debate because our group has already given the name of Dr. Swell as our participant or participant on behalf of our group. But I saw on the side of the Opposition that most of them are absent. They may be absent because..

The Minister of Food, Agriculture, Community Development and Co-operation (Shri C. Subramaniam): They are not interested. (*Interruptions*)

Mr. Chairman: Order, order. Let us not waste time. Please go on.

Shri Shinkre: I do not want that the absence of the Members of the Opposition should be interpreted by my hon. friends on the Treasury Benches as lack of interest on their part but that most of them are not aware that the sitting of the House today has been extended up to 6 O'clock. Therefore, they are absent. Anyway (*Interruption*) I know that the hon. Members from the Congress party will repeatedly say....

Shri Sheo Narain: Even the Mover of the motion is not here; the Mover of the no-confidence motion is not here. It is a point of order.

Mr. Chairman: It is not necessary there is no point of order. Please go on, Mr. Shinkre.

Shri Shinkre: The usual remark of the Congress Members is that nowadays it has become the fashion of the Opposition to bring in a no-confidence motion every session and that such a motion has lost even its value of novelty. But I want to submit most respectfully that a no-confidence motion is one of the weapons in the armoury of the Opposition, and it is definitely the time to show to the country and to Parliament—first, to the country—what are the defects and the failures of this Government and this is the time at least

when there is no Congress member who can dare say in his senses that there is no reason for a no-confidence motion against this Government. Because, what has happened in between the last session and today is enough material not only to condemn the Government for the last two months but for all the 19 years of their misrule.

It is not I who says so. It is one of the most conventional papers—the *Hindustan Times*, which has been their own supporter in the past elections—that has come forward with the worst type of condemnation of this misrule over the past 19 years. Why? For the simple reason that the present Government never take decisions from the radical, national point of view. They always take decisions taking the party interests and the next election into consideration. They want to catch a few votes more or they want to avoid losing a few votes, and they take decisions accordingly. That is their death-knell and so if they are going to Dooms day it is none of the business of the Members of the Oppo- going to Doom's day it is none of the Opposition, cannot take much credit for that. It is because of their own failures that they have come to this most pitiful condition and pitiful state.

Take any decision that the Government have taken. Take, for instance, the decision on the reorganisation of Punjab. What harm was there to continue Punjab under President's rule with that first-class experience of Shri Dharma Vira until the next election? Why did they hurry up and establish the two States? We know practically every Congress member has been made a Minister or a Deputy Minister or a Parliamentary Secretary. They are not satisfied with 50 per cent of ministerial jobs provided for Congress members. I find from today's papers that Mr. Musaffir has threatened the country by announcing that he will appoint one more Cabinet Minister and 1 more Deputy Minister. This is the sort of politicking they want to establish in this country on the strength of which they want to carry on.

They speak of socialism. What have they done to bring about socialism in this country? Anybody in his senses would say that an expenditure tax would go a long way to establish socialism. Most of the big firms show crores of rupees of expenditure and no profit. The revenue authorities just look askance without being able to do anything, because they allow the firms to have so much expenditure and to show only losses at the end of the financial year. An expenditure tax would force the big money earners to save some money, if they do not save in the normal way. I would like to submit to Mr. Bhagat—who is gossiping and talking—that he must consider the feasibility of imposing immediately a reasonably huge expenditure tax, after allowing up to a certain ceiling, so that big firms may know that if they spend lavishly they must pay a certain percentage to the Government also. If this is not done, there will be no socialism. This is the least Government should do, but I know in this pre-election year they will not do it because, where will they get the money from for their election campaign?

Devaluation itself was a condemnation of their economic policies and economic follies over the last 19 years. They have not achieved anything after that. Not only they are not increasing the exports which is beyond their control, but they are increasing the imports. This morning's paper says this year we have allowed licences to the extent of Rs. 300 crores on the assumption that our exports will increase. But what is the net result? Mr Manubhai Shah himself has said that over the last 3 months, no tangible results have been achieved and not even export of the old standard is there. They want to justify every- on the assumption that our exports the country. May I remind them, God only helps those who help themselves? Up to this day they have not anything to show that they really want to help themselves.

[Shri Shinkre]

Because I am speaking offhand, there is very little to add. Democracy does not mean merely the rule of the majority. It means much more; it means the establishment of healthy democratic conventions. What has the political party in power done in the last 19 years to establish healthy democratic conventions? Leave aside what is happening today in Andhra Pradesh where one faction of Congress people are fighting another faction of Congress people. A few months back when our late Prime Minister went to Bangalore for the AICC session, how was he treated? He was greeted with brickbats and stones. By whom? By the Congress people. Yet, we have not done anything. We did not see a single leader call their own party men and ask them to stop this nonsense. It is because they were afraid that they will lose their position in the elections. It will be a loss for whom? For the Congress Party and not for the country. No matter what a particular State may want today or tomorrow, no State has yet given any indication that it wants to secede from the country. Therefore, in this preoccupation, in this permanent worry under which they are labouring, to keep and maintain power, they will end up by losing the power. It is the usual experience that those who want to remain in power by placating all sections that are disgruntled and dissatisfied, they will end up by losing the power and losing the followers. Those who care for them only for the sake of power will desert them the day they are no more in power. So the time has come when they should learn this lesson, when they should see the writing on the wall even today, because it is the only party which, to a certain extent, does enjoy the confidence of the great bulk of the people; it is the only party which is in a position to have the overall control over this vast and big country. Therefore, it is their bounden duty, moral duty and obligation towards the poor, innocent millions of this country. They should rally round and show them once at least that they care for the country and they should keep the nation first and the party next. I hope they will really learn some lesson out of this.

Mr. Chairman: Shrimati Kamla Chaudhuri—Those hon. Members who want to speak should get up and catch the eye of the Chair. Unless they catch my eye nobody would be called.

श्रीमती कमला चौधरी (हापुड़) : सभापति महोदय, अविश्वास का प्रस्ताव यह याद दिलाता है कि जैसे दहली में बहुत से फैशन चलते हैं नित नये नये, लोक-सभा का यह फैशन बन गया है । नौ महीने के अन्दर तीन बार हमारी सरकार के ऊपर अविश्वास प्रस्ताव आया । लेकिन मुझे बड़ी निराशा हुई कि हमारे जनसंघ के नेता ने जिस भाषा में, जिन शब्दों में इस प्रस्ताव को रखा, उसमें ऐसा जान पड़ता था कि कोई तथ्य नहीं है और शायद हृदय से वह यह समझते थे कि सिर्फ चुनाव की तैयारी के लिए कुछ बातें रखना चाहते हैं और उन्होंने अपनी वही पुरानी कहानी दोहरा दी, महंगाई, अन्न की कमी जो कि इस सदन में हमेशा ही हम सुनते रहे हैं । एक बात नयी, विद्यार्थी आन्दोलन की उन्होंने कही । विद्यार्थी आन्दोलन देश में हुए । लेकिन उनके पीछे क्या वह स्वीकार करते हैं हमारे विरोधी दलों का और समाज-विरोधी तत्वों का हाथ नहीं है ? मुझे मालूम है, मेरे डिस्ट्रिक्ट में भी विद्यार्थी आन्दोलन हुए और विद्यार्थियों से मैंने स्वयं बात की तो वह यह कहने लगे कि उनको मालूम भी नहीं कि उनकी मांग क्या है, वह किस लिए आन्दोलन कर रहे हैं । मवाने में विद्यार्थी पहुंचे और वह हजारों की तादाद में मेरठ से भेजे गये । अब इनके ऊपर किसने खर्चा किया ? किस ने पैसा दिया किराये के लिए ? किस ने खाने की व्यवस्था की ? दूकानें बन्द थीं । हड़ताल थी । उनके ताले तोड़ तोड़ कर दूकानों को लूटा गया । वह माल पुलिस

ने बरामद भी किया । फिर इल्जाम सरकार के ऊपर कि गोली चलती है, लाठी चलती है। जहां ऐसी घटनाएं हों कि दिन दहाड़े डकैती हो, वहां पुलिस और क्या करेगी ? पुलिस को दो ही अधिकार आप ने कंट्रोल करने के लिए दे रखा है कि लाठी चलायें या गोली चलायें । तो आज मैं पूछना चाहती हूं अपने विरोधी दल के भाइयों से कि क्या सरकार ही पर यह सारी जिम्मेदारी है । क्या वह समाज के अंग नहीं हैं ? क्या उनका कर्त्तव्य नहीं है कि वह इन लोगों को रोक सकें ? इस तरह की बातें जनता खूब समझती है और मैं बहुत अच्छी तरह से जानती हूं कि जनता की क्या धारणा आज बनी हुई है । चुनाव के प्रति यह कल्पना कि कांग्रेस सरकार को वह हटा कर अपनी सरकार स्थापित कर लेंगे, कोरी कल्पना ही रहने वाली है । मेरी जहां तक जानकारी है, मैं समझती हूं इस बार कांग्रेस सरकार और मजबूत बनेगी । हमारे कांग्रेस के उम्मीदवार और अधिक तैयार हो कर आयेंगे, क्योंकि इस बात को सब जानते हैं कि अगर कांग्रेस को हरा दिया तो और कोई दल इस देश में ऐसा नहीं है जो अपनी सरकार कायम कर लेगा ।

श्री उ० मू० त्रिवेदी : जन संघ है ।

श्रीमती कमला चौधरी : जन संघ के पास लीडरशिप नहीं है ।

श्री उ० मू० त्रिवेदी : वह तो नतीजा अभी मालूम हो जायगा ।

श्रीमती कमला चौधरी : मैं तो आपकी बात बड़ी शान्ति से सुनती हूं, हस्तक्षेप नहीं करती हूं, आपको भी मेरी बात सुननी चाहिये ।

दूसरी बात उन्होंने यह कही कि भ्रष्टाचार बहुत है । मैं इस बात को स्वीकार करती हूं कि समाज में भ्रष्टाचार है । जब समाज में भ्रष्टाचार है तो सरकार में भी होगा, क्योंकि उसी समाज में से चुनकर प्रतिनिधि आते हैं, यदि सरकारी कर्मचारियों के लिये कहा जाय, तो वे भी हमारे ही भाई-बन्धु हैं, तो आज यह एक सामाजिक दोष है कि हमारे यहां भ्रष्टाचार है । इस दोष को कानून बना कर दूर नहीं किया जा सकता, कानून के सामने स्पष्ट उदाहरण चाहिये, तब कानून सजा दे सकता है, इसलिये यह एक सामाजिक दोष है ।

इसी तरह से एक आन्दोलन आज इलेक्शन के आने से पूर्व उठाया गया है, गोवध का, और "बंद" का ।

Mr. Chairman: Order, order. The hon. Member behind there should not read the newspaper in the House.

श्रीमती कमला चौधरी : हमारी तटस्थता की नीति के सम्बन्ध में हमारे विरोधी दल के भाई कहते हैं कि हम तटस्थ नहीं हैं । हम तटस्थ हैं—शान्ति के लिये । इससे बड़ा सबूत हमारी तटस्थता का और क्या हो सकता है कि जब पाकिस्तान का हम पर हमला हुआ तो हम ने एक लड़ाई लड़ी दिलेरी और बहादुरी से, लेकिन जब शान्ति की आवाज उठाई गई, तो हम ही ने शान्ति की आवाज उठाई और हम ने अपने नेता, अपने प्रधान मंत्री—लाल बहादुर जी का शान्ति के लिये बलिदान कर दिया—फिर भी हमारी तटस्थता से इन्कार है ? हम तटस्थ हैं अहिंसा के लिये, हिन्सा के लिये नहीं, हम तटस्थ हैं शान्ति के लिये । अशान्ति के लिये नहीं ।

एक बात और कहना चाहती हूं, मैं सदन का ज्यादा समय नहीं लूंगी, हमारे शर्मा जी कह रहे हैं कि एक कविता सुना दूं, बड़े गर्म-गर्म भाषण हुए हैं, बहुत रोष में लोग बोले हैं, अतः अब मैं आपका थोड़ा सा मनोविनोद करना चाहती हूं, लेकिन साथ ही प्रार्थना करती हूं कि हस्तक्षेप न कीजिएगा—

हे प्रजातंत्र का यहां नियम
पार्टियां बहुत सी होती हैं ।

[श्रीमती कमला चौधरी]

जैसे राजे-महाराजों के,
रानियां बहुत सी होती हैं ।
राजघराने में आते ही,
सब पटरानी कहलाती हैं ।
इसी भांति से राजनीति में,
पार्टी भी मानी जाती है ।

नई, पुरानी, छोटी-मोटी,
सब जनता की पटरानी हैं ।
जुदा-जुदा है बात सभी की,
सब की जुदा कहानी है ।
पर एक बात में एक सभी,
इस फन में सब लासानी हैं ।
प्रेम जोग है लिया सभी ने,
सब जनता पर दीवानी हैं ।
पर किसी एक की पांचों घी में,
शेष भाग को रोती हैं ।
है प्रजातंत्र का यहां नियम,
पार्टियां बहुत सी होती हैं ।

श्री उ० मू० त्रिवेदी : यह तो बिलकुल सही कहा है, तुम्हारी पांचों घी में हैं ।

Mr. Chairman: Order, order. Please do not comment like this.

Shri Bade: She is a poetess.

Mr. Chairman: Order, order.

श्रीमती कमला चौधरी :

है अधिकार बराबर सब के,
सब हैं वोटों के अधिकारी ।
फिर भी यह अन्याय,
एक ही बनती केवल सत्ताधारी ।
इसी लिये है झगड़ा, टंटा,
कहतीं सभी हमारी बारी ।
दर दर जाकर अलख जगातीं,
कहती नहारी ।

बड़ी पुरानी रीति "सौतियाडाह",
सौत को सदा सताता ॥
देख सौत को पीतम प्यारी,
गुस्सा सदा सौत को आता ।
वही नियम हैं इन पर लागू,
सब समय रार में खोती हैं ।
है प्रजातंत्र का यहां नियम,
पार्टियां बहुत सी होती हैं ।

और जरा उसकी भी सोचो,
जिसका पल्ला कुछ भारी है ।
नखरे, नाज, चमकवाली है,
सिर चढ़ी पिया की प्यारी है ।
है अधिकार, हुकूमतवाली,
धन-दौलत की जिस पर ताली ।
सुखी कहां वह भी बेचारी,
नित करनी पड़ती है रखवाली ।
सौतें दिन रात सताती हैं,
सब मिलकर ऐब लगाती हैं ।
मात इसे हो, मैं हूं रानी,
मनसूबे सभी बनाती हैं ।
इसी सोच में चिन्तित रहती,
सब बीज जहर के बोती हैं ।
है प्रजातंत्र का यहां नियम,
पार्टियां बहुत सी होती हैं ।

बड़ी मुसीबत है जनता की,
जैसे बहु-पत्नीवाले की
वह भी आंख दिखा देती है,
जो मालिक कुंजी-ताले की ।
काम पड़े पर कह देती है,
क्या मेरी ही ठेकेदारी ।
कहां मरी वे प्रेम दिवानी,
जो जातीं तुझपर बलिहारी ।
बाकी सब ताना दे कहतीं,
अरे वाह, पतिव्रता नारी ।

लछन देख लिये उमके,
जिसके कारण हम गई बिसारीं ।
सभी दुखी हैं अपने दुख से,
नित तीखे तीर चुभोती हैं ।
है प्रजातंत्र का यहां नियम,
पार्टियां बहुत सी होती हैं ।

सभापति महोदय, प्रजातन्त्र में दो पार्टियां होनी चाहियें। मेरी राय में एक सरकार की पार्टी हो और दूसरी विरोधी पार्टी। इन्सान से गलती होती है, सरकारी कर्मचारी भी इन्सान हैं, और वे भी गलती कर सकते हैं। हमारा कर्त्तव्य है कि उन गलतियों को दूर करें/मुझे बड़ा दुख है, मैं तो समझती थी कि हमारे जनसंघ के नेता सचमुच कुछ रचनात्मक सुझाव देंगे, देश में जो आन्दोलन चल रहे है, उनका हल बतायेंगे, लेकिन दुख के साथ कहना पड़ता है कि कोई रचनात्मक सुझाव हमारे सामने नहीं आया। जितने भी भाषण मैंने विरोधी भाइयों के सुने, उनका मुझ पर केवल यही असर पड़ा, कि यह सब चुनाव की तैयारी है।

हमारे स्वतन्त्र पार्टी के नेता मसानी साहब ने कहा कि कांग्रेस की करारी हार होने वाली है, करारी हार कांग्रेस की नहीं होने वाली है, विरोधी दलों को करारी हार होने वाली है, क्योंकि यह जो आतंक फैल गया है, यह जो प्रदर्शन हुए हैं, ये जो तोड़ फोड़ और रेल की पटड़ियों के उखाड़ने के काम हुए हैं, एक तरफ कहना—अन्न की कमी है, दूसरी तरफ पटड़ियां उखाड़ कर गाड़ियों को रोकना, इन बातों को जनता बहुत अच्छी तरह से समझ रही है। मैं देहातों में जाती हूं तो लोग कहते है कि इन लोगों के कारनामें हम देख रहे हैं, अगर कभी इनकी सरकार आ गई, तो देश का क्या होगा, इसलिये इनकी यह कल्पना पूरी होने वाली नहीं है। मैं तो यह कहूंगी कि हमारा सब का, आपका भी यह कर्तव्य होना चाहिए कि हम सब मिल कर इन आन्दोलनों का मुकाबला करें। विद्यार्थियों में असन्तोष है, तो हम सब को मिल कर उनका प्रयत्न करना चाहिये, उनकी समस्याओं को सोचना और समझना चाहिये, सरकार के सामने रखना चाहिये। शिक्षा मंत्री इस समय यहां उपस्थित नहीं हैं, लेकिन एक निवेदन मैं जरूर करना चाहूंगी कि विद्यार्थियों में असन्तोष जरूर है, लेकिन यह असन्तोष भड़काया हुआ है, उनको भड़काया गया है। लेकिन फिर भी सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि 19 वर्षों में हमने और बहुत कुछ काम किया, इस को दुनिया जानती है इतिहास साक्षी है, लेकिन भाषा सम्बन्धी समस्या हम नहीं हल कर पाये हैं। मातृभाषा में शिक्षा का न होना मैं समझती हूं कि बहुत बड़े असन्तोष का कारण है जिस पर हमारे शिक्षा मन्त्री विचार करेंगे।

एक बात मैं और कहना चाहती हूं कि सूखे और अकाल का हम लोग मुकाबला करना चाहते हैं, लेकिन मेरी कांस्टिट्युएन्सी में बहुत से लोग ऐसे है जिन्होंने अपने पैसे से ट्यूबवैल लगा लिये हैं, लेकिन उन्हें बिजली नहीं मिलती। सरकार को यह चाहिये कि इस वक्त अपनी तमाम शर्तों को हटा ले और यह कर दे कि जो भी अपने आप ट्यूबवैल लगाना चाहता है, जिसमें इतनी सामर्थ्य हो, उसको वह तुरन्त बिजली दे दे। जहां ऐसा नहीं हो सकता है वहां जल्दी से जल्दी सरकारी ट्यूब वैल लगने चाहियें। मैं समझती हूं कि इस समस्या को हम इस तरह से हल कर सकते हैं।

इन शब्दों के साथ मैं इस निन्दाप्रस्ताव की निन्दा करती हूं जो कि सरकार के खिलाफ लाया गया है। मैं उसका विरोध करती हूं।

श्री मुहम्मद ताहिर (किशनगंज): जनाब चेयरमैन साहब, पार्लियामैंट सिर्फ हिन्दुस्तान में ही नहीं है, दुनिया के अन्दर आप जहां भी

[श्री मोहम्मद ताहिर]

जायें, उनमें बहुत सी जगहों में पार्लियामेंट नजर आयेगी । पार्लियामेंट में गवर्नमेंट भी होती है और अपोजीशन भी होती है । लेकिन मुझे इस बात पर हैरत होती है कि जब हम अपने यहां की अपोजीशन पार्टियों को देखते हैं तो ऐसा मालूम होता है कि कोई चाइना से आया हुआ है, कोई मास्को से आया हुआ है और कोई अमरीका से आया हुआ है । हमारे यहां दुनिया के मुख्तलिफ हिस्सों के लोग आये हैं और महज झगड़ा करने के लिये । अजीब हालत है । अपोजीशन का काम तो यह होना चाहिये कि वे इस मुल्क को अपना मुल्क समझे, इस एडमिनिस्ट्रेशन को अपना एडमिनिस्ट्रेशन समझे, और फिर इस के अन्दर जो खराबी हो उसको लाये । खराबी को बतला कर एडमिनिस्ट्रेशन को कायल करे और मुल्क को फायदा पहुंचाये । लेकिन हमें अफसोस इस बात का है कि हम देख रहे हैं कि न वह इस मुल्क को अपना मुल्क समझते हैं न इस एडमिनिस्ट्रेशन को अपना एडमिनिस्ट्रेशन ।

हम यहां पर उनके दो फंक्शन्स देख रहे हैं । एक तो इस हाउस के अन्दर और एक हाउस के बाहर । हाउस में उनका जो फंक्शन है उसको आप सब जानते हैं कि वह क्या कर रहे हैं । हाउस के बाहर हमारे बनर्जी साहब ने कहा कि फलां जगह रिट्रेंचमेंट हो गया, यह किस की जिम्मेदारी है, फलां मजदूर को तकलीफ हुई, यह किस की जिम्मेदारी है । मैं कहता हूं कि करोड़ों नहीं अरबों रुपयों का नेशनल लास रेलों को जलाने, बसों को जलाने, पोस्ट आफिस को जलाने, थानों को जलाने, सड़कों को खराब करने, पैट्रोल पम्प को खराब करने, प्रेजिडेंट की लाइब्रेरी को जलाने से हुआ है । यह जो तमाम हरकतें पांच सालों में इस मुल्क में हुई हैं, जिनमें अरबों रुपयों का नेशनल लास हुआ, यह किस ने किया है । क्या हम लोगों ने कहा कि इस किस्म की हरकतें करो, ट्रेन जला दो, तार खोल दो, चलते हुए मुसाफिरों को जो अपने सफर में जा रहे हों, तकलीफ पहुंचाओ । आप जानते हैं कि सफर में लोगों को कितनी तकलीफें होती हैं, उस को हर चीज की जरूरत होती है । लेकिन उस मुसीबत को किस ने भड़काया । श्री बनर्जी बतलायें कि यह जिम्मेदारी किस की थी । हमारी कांग्रेस पार्टी की या अपोजीशन की । आप को मालूम होगा कि जो एजिटेशन शुरू हुए, यह जो बन्द शुरू हुए, बिहार बन्द, यू० पी० बन्द, बम्बई बन्द, यह किस ने किये । यह अपोजीशन पार्टीज ने किये । इन बन्दों से क्या कम नेशनल प्रापर्टी का लास हुआ है । हमारी अपोजीशन पार्टीज यह समझ रही हैं कि मुल्क के अन्दर लोगों के आंखें नहीं हैं, वह देखते नहीं हैं कि हमारा नेशनल लास कौन कर रहा है, मुल्क को बरबाद कौन कर रहा है । हमारी गवर्नमेंट, जो कि मुल्क को फायदा पहुंचाना चाहती है, उसको कौन चैन नहीं लेने देता है । सब समझते हैं कि अपोजीशन हम को चैन नहीं लेने देना चाहता है । यह निहायत शर्म की बात है ।

मैं अपोजीशन के लोगों से कहूंगा कि यह नो कांफिडेंस मोशन न लाते बल्कि उनको चाहिये था कि यू० पी० में जाते, बिहार में जाते और वहां के खेतों को जलते हुए देखते, जिस जगह बोवाई नहीं हुई है उसको देखते । जो जनता परेशान है उसको देखते । अगर वह ऐसा करते तो उन की हिम्मत नहीं होती कि यहां पर नो कांफिडेंस मोशन लाते । बल्कि वह गवर्नमेंट के साथ जाते और जनता को मुसीबत से बचाने में हुकूमत की मदद करते । लेकिन यह उन्होंने नहीं किया । किया यह कि यहां आकर गवर्नमेंट को क्रिटिसाइज करना शुरू किया । जो बिल्कुल जायज नहीं ।

मैं कहता हूं कि गवर्नमेंट करे क्या । तमाम बिहार में सुखाड़ हो गया है । आप देखेंगे तो

ग्राप की ग्रांखों में ग्रांसू ग्रा जायेंगे । वहां पर जानवरों को पानी नहीं मिलता । जानवरों को लोग भगा रहे हैं क्योंकि न वह खाना दे सकते हैं उन को न पानी दे सकते हैं । ऐसी हालत में ग्राज इस हाउस में क्या हो रहा है । यह बड़े शर्म की बात है ।

मुझे इस बात पर एक किस्सा याद ग्रा गया । जरा इसको सुन लीजिये । एक मौलवी साहब थे ग्रौर उनकी एक बीबी थी । कभी मियां बीबी में मेल नहीं होता था । लेकिन मौलवी साहब बराबर ग्रपनी बीबी को ग्रच्छी ग्रच्छी साड़ियां देते थे, जेवरात देते थे, लिपस्टिक देते थे, यह यत्न करते थे लेकिन उनकी किसी बात से बीबी खुश नहीं होती थीं । मौलाना परेशान हो गये । एक दिन वह घर छोड़ कर जंगल चले गये फकीर हो कर । तपस्या करते करते उन्होंने यह गुण सीखा कि हवा में उड़ जाते थे । जब उन्होंने उड़ना सीख लिया तब कहा कि ग्रब जाकर मुझ में कुछ गुण ग्राया है, चलो जरा बीबी को कायल करो । चुनांचे वह उड़ कर ग्रपने घर के चारों तरफ उड़ने लगे । उनकी बेगम साहिबा ग्रपनी सहेली के साथ ग्रांगन में बैठी हुई थी । उन्होंने देखा तो कहा यह क्या उड़ कर ग्राया । वह भागीं ग्रौर डर से घर में घुस गई । एक दफा मौलाना ने फिर उड़ान की, फिर दूसरी तरफ को उड़ान की । बेगम साहिबा फिर दूसरे कोने में घुस गई । वह देख रहे थे । उन्होंने कहा कि ग्रब वह कायल हो जायेगी । इतनी खिदमत से जो कायल नहीं हुई थी वह ग्रब हो जायेगी । वह एक जगह उतरे ग्रौर वहां से घर ग्राये, तो देखा कि बीबी कोने में छिपी हुई है । बहुत परेशान थी । पूछा क्या बात है, तो उन्होंने कहा कि क्या बतलाऊं, ग्रभी मैंने देखा, मालूम नहीं कौन फरिश्ता था, ग्रच्छा ग्रादमी मालूम होता था । तमाम मकान में उड़ कर इधर से उधर ग्रौर उधर से इधर जाता था । मौलाना ने सोचा कि ग्रब यह कायल हो जायेगी । उन्होंने गलती से कह दिया कि ग्ररे भाई, तुम ने देखा नहीं । वह मैं ही तो था । बेगम साहिबा ने कहा ग्रच्छा जनाब थे, तब ही तो टेढ़े उड़ रहे थे । गरज बेगम साहिबा ग्रपनी ग्रादत के मुताबिक शिकायत से बाज ग्राईं ।

कांग्रेस ने हजार यत्न किये, इस गवर्नमेंट में मुल्क की खिदमत करके तमाम लोगों को सभी चीजें मुहेय्या कीं । ग्रौर हर किस्म की तरक्कियात में लगी हुई है मगर ग्रपोजीशन की हालत यह है कि बावजूद तरक्कियों के उन्हीं बेगम की तरह हैशिकायत करना ग्रपना शेवा बना लिया है । यह हालत हमारे ग्रपोजीशन की है । हजार सहूलियत कीजिये, लेकिन वह यही कहेंगे कि टेढ़ापन नहीं गया ।

एक माननीय सदस्य : ग्रभी तक नहीं गया ।

श्री मुहम्मद ताहिर : ग्रापको हमारी तमाम बातें बुरी नजर ग्रायेंगी ।

मैं यह कह रहा था कि हमको चाहिये था कि जरा इन्सानियत के साथ तमाम बातों पर गौर करते हुए सोचते कि यह मुल्क हमारा है, हमें इसे चलाना है । ग्रापके सामने यह सवाल होना चाहिये कि कभी ग्राप भी इस एडमिनिस्ट्रेशन में ग्रा सकते हैं, भले ही ग्राज कांग्रेस एडमिनिस्ट्रेशन में हो । ग्रापको चाहिये कि ऐडमिनिस्ट्रेशन को मदद कीजिये न कि परेशान कीजिये ।

मैं कहना चाहता हूं कि ग्रपोजीशन वाले कुछ भी सोचते हों, लेकिन ग्रापको यकीन दिलाता हूं, ग्रौर सब को यकीन दिलाता हूं कि तमाम ग्रपोजीशन वाले मिल कर भी ग्रगर चाहें कि ग्राफताब पर धूल डाल कर उसकी रोशनी को खराब कर दें, तो भी यह ग्राफताब चमकता रहेगा । इसलिये वह इस बात की कोशिश न करें। ग्राफताब पर धूल डालने से क्या फायदा होगा । कांग्रेस गवर्नमेंट ईमानदारी के साथ काम करती रहेगी। हो सकता है कि हम में कोई कमी हो, ग्राखिर

[श्री मुहम्मद ताहिर]

हम इन्सान हैं, लेकिन अगर पानी नहीं बरसा तो हम क्या करें।

एक माननीय सदस्य : हां ।

श्री मुहम्मद ताहिर : हां कहते हो, पानी न बरसने पर न आपका अख्त्यार है और न हमारा । इस साल पानी नहीं बरसा तो हो सकता है कोई गुनाह की बात होगी, नहीं तो यह बात न होती ।

श्री ओंकार लाल बेरवा : कांग्रेस के पाप से पानी नहीं आया ।

श्री मुहम्मद ताहिर : अपने महापाप को नहीं देखते । आपको भी बरसात पर अख्त्यार नहीं है और हमको भी नहीं है । पानी नहीं बरसा, सूखा पड़ गया तो हम क्या करें।

हम कोशिश करेंगे कि एक आदमी भी इस मुल्क का भूख की वजह से मरने न पाए । दुनिया के जिस कोने से भी हो सकेगा, हम उस को गल्ला लाकर खिलायेंगे, और हम उन को जिन्दा रखेंगे और उनको हम कांग्रेस जिन्दाबाद का नारा लगाने का मौका देंगे । हम कभी आपको मौका नहीं देंगे कि जिस तरह से आप यहां हाउस में नुक्सान कर रहे हैं उस तरह से बाहर जाकर भी इस मुल्क के लोगों को नुक्सान पहुंचाते रहिये ।

[شری محمد طاہر (کشن گنج) -

جناب چیرمین صاحب - پارلیامینٹ صرف ہندوستان میں ہی نہیں ہے - دنیا کے اندر جہاں بھی جائیں - ان میں بہت سی جگہوں میں پارلیامینٹ نظر آئے گی - پارلیامینٹ میں گورنمینٹ بھی ہوتی ہے اور اپوزیشن بھی ہوتا ہے - لیکن مجھے اس بات پر حیرت ہوتی ہے کہ جب ہم اپنے یہاں کی اپوزیشن پارٹیوں کو دیکھتے ہیں تو ایسا معلوم ہوتا ہے کہ کوئی چائنا سے آیا ہوا ہے - کوئی ماسکو سے آیا ہوا ہے اور کوئی امریکہ سے آیا ہوا ہے - ہمارے یہاں دنیا کے مختلف حصوں کے لوگ آتے ہیں اور محض جھگڑا کرنے کے لئے - عجیب حالت ہے - اپوزیشن کا کام تو یہ ہونا چاہئے کہ وہ اس ملک کو اپنا ملک سمجھے - اس ایڈمنسٹریشن کو اپنا ایڈمنسٹریشن سمجھے - اور پھر اس کے اندر جو خرابی ہو اس کو لائے - خرابی کو بتلا کر ایڈمنسٹریشن کو قائل کرے اور ملک کو فائدہ پہنچائے - لیکن ہمیں افسوس اس بات کا ہے کہ ہم دیکھ رہے ہیں کہ نہ وہ اس ملک کو اپنا ملک سمجھتے ہیں نہ اس ایڈمنسٹریشن کو اپنا ایڈمنسٹریشن -

ہم یہاں پر ان کے دو فنکشنس دیکھ رہے ہیں - ایک تو اس ہاؤس کے اندر اور ایک اس ہاؤس کے باہر - ہاؤس میں ان کا جو فنکشن ہے اس کو آپ سب جانتے ہیں کہ وہ کیا کر رہے ہیں - ہاؤس کے باہر ہمارے بلرجی صاحب نے کہا کہ فلاں جگہ ریگریلچیمینٹ ہو گیا - یہ کس کی ذمہداری ہے - فلاں مزدور کو تکلیف ہوئی یہ کس کی ذمہداری

ہے - میں کہتا ہوں کہ کروڑوں نہیں اربوں روپیوں کا نیشنل مں ریلوں کو جلانے - بسوں کو جلانے - پوسٹ آفسوں کو جلانے - تھانوں کو جلانے - سڑکوں کو خراب کرنے - پیٹرول پمپ کو خراب کرنے -پریزیڈنٹ کی لائبریری کو جلانے سے ہوا ہے - یہ جو تمام حرکتیں پانچ سالوں میں اس ملک میں ہوئی ہیں - جن میں اربوں روپیوں کا نیشنل لاس ہوا - وہ کس نے کیا ہے - کیا ہم لوگوں نے کہا کہ اس قسم کی حرکتیں کرو - ٹرین جلا دو - تار کھول دو - چلتے ہوئے مسافروں کو - جو سفر میں جا رہے ہوں - تکلیف پہنچاو - آپ جانتے ہیں کہ سفر میں لوگوں کو کتنی تکلیفیں ہوتی ہیں - اس کو ہر چیز کی ضرورت ہوتی ہے - لیکن اس مصیبت کو کس نے بھڑکایا - شری بگرجی بتلائیں کہ یہ ذمہ‌داری کس کی تھی - ہماری کانگریس پارٹی کی یا اپوزیشن کی - آپ کو معلوم ہوگا کہ جو ایجیٹیشن شروع ہوئے - یہ جو بند شروع ہوئے - بہار بند - یو - پی بند - بمبئی بند - یہ کس نے کئے - یہ اپوزیشن پارٹیز نے کئے - ان بندوں سے کیا کم نیشنل پراپرٹی کا لاس ہوا ہے - ہماری اپوزیشن پارٹیز یہ سمجھ رہی ہیں کہ ہمارے ملک کے اندر لوگوں کے انکھیں نہیں ہیں - وہ دیکھتے نہیں ہیں کہ ہمارا نیشنل لاس کون کر رہا ہے - ملک کو برباد کون کر رہا ہے - ہماری گورنمنٹ کو - جو کہ ملک کو فائدہ پہنچانا چاہتی ہے - اس کو کون چین نہیں لینے دیتا ہے - سب سمجھتے ہیں اپوزیشن ہم کو چین نہیں لینے دینا چاہتا ہے - یہ نہایت شرم کی بات ہے -

میں اپوزیشن کے لوگوں سے کہوں گا کہ یہ تجویز نو کانفیڈینس موشن نہ لاتے بلکہ ان کو چاہئے تھا کہ یو-پی- میں جاتے - بہار میں جاتے اور وہاں کے کھیتوں کو جلتے ہوئے دیکھتے- جس جگہہ بوائی نہیں ہوئی ہے اس کو دیکھتے - جو جنتا پریشان ہے اس کو دیکھتے - اگر وہ ایسا کرتے تو ان کی ہمت نہیں ہوتی کہ یہاں پر نو کانفیڈینس موشن لاتے - بلکہ وہ گورنمنٹ کے ساتھ جاتے اور جنتا کو مصیبت سے بچانے میں حکومت کی مدد کرتے - لیکن یہ انہوں نےنہیں کیا - کیا یہ کہ یہاں آ کر گورنمنٹ کو کریٹیسائز کرنا شروع کیا- جو بالکل جائیز نہیں -

میں کہتا ہوں کہ گورنمینٹ کرے کیا - تمام بہار میں سوکھا ہو گیا ہے - آپ دیکھیں ، تو ان کی آنکھوں میں آنسو آ جائیں گے - وہاں پر جانوروں کو پانی نہیں ملتا- جانوروں کو لوگ بھگا رہے ہیں کیونکہ

[شری محمد طاہر]

نہ وہ کھانا دے سکتے ہیں ان کو نہ پانی دے سکتے ہیں - ایسی حالت میں آج اس ہاؤس میں کیا ہو رہا ہے - یہ بڑے شرم کی بات ہے -

مجھے اس بات پر ایک قصہ یاد آگیا - ذرا اس کو سن لیجئے - ایک مولوی صاحب تھے اور ان کی ایک بیوی تھی - کبھی میاں بیوی میں میل نہیں ہوتا تھا - لیکن مولوی صاحب برابر اپنی بیوی کو اچھی اچھی ساڑیاں دیتے تھے - زیورات دیتے تھے - لپ اسٹک دیتے تھے - تمام جتن کرتے تھے لیکن ان کی بیوی کسی بات سے خوش نہیں ہوتی تی - مولانا پریشان ہو گئے - ایک دن وہ گھر چھوڑ کر جنگل چلے گئے فقیر ہو کر - تپسیا کرتے کرتے انہوں نے یہ گن سیکھا کہ ہوا میں اڑ جاتے تھے - جب انہوں نے اڑنا سیکھ لیا تب کہا کہ اب جاکر مجھ میں کوئی گن آیا ہے - چلو گھر بیوی کو قائل کروں - چنانچہ وہ اڑ کر اپنے گھر کے چاروں طرف اڑنے لگے - ان کی بیگم صاحبہ اپنی سہیلی کے ساتھ آنگن میں بیٹھی ہوئی تھیں - انہوں نے دیکھا تو کہا یہ کیا اڑ کر آیا - وہ بھاگیں اور ڈر کے مارے گھر میں گھس گئیں - ایک دفعہ مولانا نے پھر - ان کی - پھر دوسری طرف کو اڑان کی - بیگم صاحبہ دوسرے کونے میں گھس گئیں - وہ دیکھ رہے تھے - انہوں نے کہا کہ اب یہ قائل ہو جائے گی - اتنی خدمت سے جو قائل نہیں ہوئی تھی وہ اب ہو جائے گی - وہ ایک جگہ اترے اور وہاں سے گھر آئے تو دیکھا کہ بیوی کونے میں چھپی ہوئی ہے - بہت پریشان - پوچھا کیا بات ہے - تو انہوں نے کہا کہ کیا بتلاؤں - ابھی میں نے دیکھا - معلوم نہیں کون فرشتہ تھا - اچھا آدمی معلوم ہوتا تھا - تمام مکان میں اڑ کر ادھر سے ادھر جاتا رہا - مولانا نے سوچا کہ اب یہ قائل ہو جائے گی - انہوں نے غلطی سے کہہ دیا کہ ارے بھائی - تم نے دیکھا نہیں - وہ میں ہی تو تھا - بیگم صاحبہ نے کہا اچھا جناب تھے جب ہی تو تھوڑے تھوڑے اڑ رہے تھے - غرض بیگم صاحبہ اپنی عادت کے مطابق شکایت سے باز نہ آئیں -

کانگریس نے ہزار جتن کئے - اس گورنمنٹ نے ملک کی خدمت کرکے تمام لوگوں کو سبھی چیزیں مہیا کیں - اور ہر قسم کی ترقیات میں لگی ہوئی ہے مگر اپوزیشن کی حالت یہ ہے کہ باوجود ترقیوں کے انہیں بیگم کی طرح شکایت کرنا اپنا شیوہ بنا لیا ہے - یہ حالت ہمارے اپوزیشن کی ہے - ہزار سہولتیں کیجئے لیکن وہ یہی کہیں گے کہ تھوڑاپن نہیں گیا -

شری محمد طاهر : ہاں کہتے ہو - پانی نہ برسنے پر نہ آپ کا اختیار ہے اور نہ ہمارا - اس سال پانی نہیں برسا تو ہو سکتا ہے کوئی گناہ کی بات ہوگی - نہیں تو یہ بات نہ ہوتی -

شری اونکار لال بھروانہ : کانگریس کے پاپ سے پانی نہیں آیا -

شری محمد طاهر : اپنے مہا پاپ کو نہیں دیکھتے - آپ کو بھی برسات پر اختیار نہیں ہے اور ہم کو بھی نہیں ہے - پانی نہیں برسا - سکھاڑ پڑ گیا تو ہم کیا کریں - ہم کوشش کریں گے کہ ایک آدمی بھی اس ملک کا سوکھے کی وجہ سے مرنے نہ پائے - دنیا کے جس کونے سے بھی ہو سکے گا ہم اس کو غلہ لا کر کھلائیں گے اور ہم ان کو زندہ رکھیں گے - اور ان کو ہم کانگریس زندہ باد کا نعرہ لگانے کا موقع دیں گے - ہم کبھی آپ کو موقع نہیں دیں گے کہ جس طرح سے آپ یہاں ہاؤس میں نقصان کر رہے ہیں اس طرح سے باہر جاکر بھی اس ملک کے لوگوں کو نقصان پہنچاتے رہیئے -]

श्री शिव नारायण : मैं आपका बड़ा अनुग्रहीत हूं कि आपने मुझे नो-कान्फिडेंस मोशन पर बोलने का मौका दिया है । इस मोशन की फेल्योर का सब से बड़ा सबूत यह है कि जो मूवर महोदय हैं वह खुद गायब हैं । पब्लिक खुद समझेगी कि अपोजीशन के जो

ایک مائلیہ سدسیہ - ابھی تک نہیں گیا -

شری محمد طاهر : آپ کو تو ہماری تمام باتیں بری نظر آئیں گی- میں کہہ رہا تھا کہ ہم کو چاہیئے کہ ذرا انسانیت کے ساتھ تمام باتوں پر غور کرتے ہوئے سوچتے کہ یہ ملک ہمارا ہے - ہمیں اسے چلانا ہے - آپ کے سامنے یہ سوال ہونا چاہیئے کہ کبھی آپ بھی اس ایڈمنسٹریشن میں آ سکتے ہیں - بھلے آج کانگریس ایڈمنسٹریشن میں ہے - آپ کو چاہیئے کہ ایڈمنسٹریشن کو مدد کیجیئے نہ کہ پریشان کیجیئے -

میں کہنا چاہتا ہوں کہ اپوزیشن والے کچھ بھی سوچتے ہوں - لیکن آپ کو یقین دلاتا ہوں اور سب کو یقین دلاتا ہوں کہ تمام اپوزیشن والے مل کر بھی اگر چاہیں کہ آفتاب پر دھول ڈال کر اس کی روشنی کو خراب کر دیں - تو بھی یہ آفتاب چمکتا رہے گا - اس لئے وہ اس بات کی کوشش نہ کریں - آفتاب پر دھول ڈالنے سے کیا فائدہ ہوگا - کانگریس گورنمنٹ ایمانداری کے ساتھ کام کرتی رہے گی - ہو سکتا ہے کہ ہم میں کوئی کمی ہو - آخر ہم انسان ہیں- لیکن اگر پانی نہیں برسا تو ہم کیا کریں -

ایک مائلیہ سدسیہ : ہاں

[श्री शिव नारायण]

लीडर हैं, जो मूवर हैं, वह भाग गए है । ताहिर साहब ने शुरू ही किया था कि वह रफूचक्कर हो गए । मैं कहना चाहता हूं कि हाउस में ऐसी हुल्लड़बाजी से काम नहीं चलेगा ।

सभापति महोदय : माननीय सदस्य कल अपना भाषण जारी रखें ।

Mr. Chairman: The hon. Member may continue his speech tomorrow. The House stands adjourned till 11 A.M. tomorrow.

18.02 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till eleven of the clock on Thursday, November 3, 1966/Kartika 12, 1888 (Saka).